शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
Volume - 01 Issue – 02 April– June -2023

कृष्णा सोबती के 'मित्रो मरजानी' उपन्यास में नारी समस्याएँ

सूर्जलेखा ब्रह्म
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक
संपर्क : 6003427091/7576942436

प्रस्तावना : मानव जीवन समस्याओं से घिरा होता है। समस्याओं से जूझते हुए मानव को अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है। तमाम समस्याओं के मध्य आज नारी समस्याएँ विश्वभर में अधिक प्रबल बन पड़ी है। जिसका हल और समाधान बेहद जरूरी है। स्त्री आदिकाल से ही समाज में पुरुष के शोषण का शिकार बनी रही है। शिक्षा प्रणाली, अज्ञानता का शिकार होकर वह अपना अस्तित्व खो चुकी है। स्वतंत्रता के नाम पर आज भी पुरुष उसे परतंत्र के अंधेरे में ही रखते हैं। 'कृष्णा सोबती' ने जिन समस्याओं को अपनी आँखों से देखा, जिया, महसूस किया उसी को अपने उपन्यासों में रूपायित करने का प्रयास किया। वह एक ऐसे समाज में जी है जहां नारी को राजनीतक, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक और शिक्षा सभी प्रकार से घेरा जा रहा था। उसे अपने लिए सोचने का हक तो था ही नहीं साथ ही अपने साथ हो रहे अत्याचारों को भी किसी के समक्ष बयां नहीं कर सकती थी लेकिन सोबती ने अपने स्त्रियों को उनका निजबल पहचानकर आगे बढ़ने की और स्वयं समस्याओं को सुलझाने की नवीन दिशा दिखाने की कोशिश की है। मुख्यतः इस उपन्यास में हम नारी जीवन से संबंधित विविध समस्याओं को देखेंगे।

बीज शब्द : स्त्री, पुरुष, समाज, आर्थिक, समस्या आदि।

वेश्यावृति की समस्या :- वेश्यावृति या जिस्मफरोशी एक प्रकार का कारोबार है जिसमें पैसों के लिए शारीरिक रिश्ते बनाए जाते हैं। 'महाभारत' में राज, नगर, गुप्त वेश्या का, 'गौतम बुद्ध' के समय में 'आम्रपाली' का और 'बाइबेल' में 'केडोशोथ' वेश्याओं का वर्णन देखने को मिलता है। वेश्याएँ आदिकाल से हमारे समाज का हिस्सा रही है। उपन्यास में प्रमुख पात्र 'मित्रो' की माँ 'बालो' आर्थिक विपन्नता के कारण वेश्या समाज में प्रवेश करती है। अर्थ का संकट मनुष्य को झूठ बोलने, गलत तरीके अपनाने को मजबूर करता है। युवावास्था में ही पति के देहांत के बाद 'बालो' यह पथ चुनने को मजबूर होती है। 'बालो' कहती है "एक नहीं बालो ने सौ-सौ मर्द नचाए अपने इशारों पर बस एक खसम का सुख न बदा था इस अभागी के भाग।" अर्थात वह अपने पति को याद करती हुई कहती है कि कई मर्दो के साथ उन्होनें संबंध बनाए लेकिन जिसकी चाहत उन्हें थी वह आज उनके साथ नहीं है। 'राधाकमल मुखर्जी' लिखते हैं "सेक्स प्रेम तृप्ति के साथ-साथ सामाजिक आवश्यकताओं एवं नैतिक मूल्यों की भी पूर्ति करते हैं।" यौन संबंध कइयों के लिए गलत है तो कइयों की आवश्यकता पूरी करता है जिसे वह जीते-जी समाज में रहकर पूरा नहीं कर पाता। लेखिका 'बालो' के जरिये हमारे समाज को दर्शाते हैं कि किस प्रकार आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को अपनी गृहस्थी संभालने के लिए काम तक नहीं मिलता और न चाहते हुए भी उसे वहीं रास्ता अपनाना पड़ता है जो मनुष्य को समाज से परे कर दे। वेश्या 'बालो' पूरे समाज में तिरस्कृत होती है। लोग उसे गलत नजरिए से देखते हैं लेकिन उनके भीतर छिपे दर्द को कोई नहीं देख पाता। जिस कारण वह अपनी परिस्थितियों से स्वयं जूझती रहती है।

अधिकतर पुरुष काम की दाह बुझा लेने के बाद स्त्री को समाज से बहिष्कृत कर देते हैं। वे पुरुषों की काम वासना को तृप्त करने का साधन मात्र बनकर रह जाती है जिसका जीता जागता उदाहरण 'बालो' है। 'बालो' जबतक शारीरिक रूप से सुदृढ़ अपनी जवान अवस्था में थी, तब तक उसके पास न काम की कमी थी न पैसों की लेकिन जैसे ही वह वृद्धा अवस्था में आती है, उनका व्यवसाय बंद हो जाता है। उसके पास कोई नहीं आता, वह अकेली रह जाती है। अर्थात जब तक वेश्या युवां है, तंदुरुस्त है तब तक उसका आनंद लेने के लिए कई पुरुष आते-जाते रहते हैं लेकिन जैसे ही उसकी उम्र चली जाती है, यौवन बीत जाती है उसके सामने कोई नहीं आता। इस दर्द को 'बालो' अपनी बेटी 'मित्रो' के सामने अभिव्यक्त करती हुई कहती है "तेरी माँ के जमाने लद गए री मित्ती ! अब कौन इसका मित्र प्यारा और कौन इसका संगी-साथी ! अब इस ठुठरी ठंडी भट्टी का कोई वाली-वारस नहीं ! कोई मरे मनुक्ख का नाम भी नहीं। तेरी अकेली माँ को अब यह घर काटने को दौड़ता है, री।" इससे हम समझ सकते हैं कि वेश्या का जीवन एक बलि के बकरे की तरह होता है। उसके यौवन के ढलते ही सारे चाहने वाले एक-एक करके गायब हो जाते हैं। वेश्याओं की दयनीय स्थिति का वर्णन करते हुए फ्रेंच लेखिका 'सिमोन द बोउवार' लिखते हैं "वेश्या की स्थिति एक बलि के बकरे के समान है। पुरुष उसके साथ व्यभिचार करता है और फिर उसे बहिष्कृत कर देता है। चाहे वेश्या वेध रूप से पुरुष की देख रेख में रहे, चाहे अवेध रूप से छिपकर अपना कार्य करे उसे हमेशा अछूत की तरह देखा जाता है।"

संतानहीन होने की समस्या :- भारतीय समाज में नारी की चरम निदर्शन उसके मातृ रूप में दिखाई पड़ती है। नारी के मातृत्व होने को ही उसके जीवन की पूर्णता का प्रतीक माना जाता है। कई नारी इस सुख को पाने में असमर्थ होती है। प्राय: ही संतानहीनता का दोष महिला के सिर पर थोंप दिया जाता है। आखिरकार पुरुष में भी कोई कमियाँ हो सकती है इसे कोई देखने की कोशिश नहीं करता। उपन्यास की नायिका 'मित्रो' इसी कुंठा से घिरी हुई है। पति नपुंसक होने के कारण वह मित्रो को संतानप्राप्ति नहीं करा सकता फिर भी वह हर-रोज उसके साथ अत्याचार, मार-पीट करता है। एक तो 'मित्रो' पहले से ही अपने माँ न बन पाने से दुःखी थी साथ ही जब वह अपने जिठानी 'सुहागवंती' के माँ बनने की खबर सुनती है तो और अधिक पीड़ित हो जाती है। वह खुश तो थी परंतु भीतर ही भीतर ईष्या महसूस करती है। जिठानी के माँ बनने पर उसकी सास मित्रो और उसकी जिठानी दोनों के लिए झुमके बनवाने को कहने पर वह अपनी दुःख व्यक्त करती हुई कहती है "मुझ पर ऐसी मोहर क्यों, माँ जी ! कौन मित्रो तुम्हारी पुत्र-पोते जनने बैठी है ? झुमके तो दिलवाओ अपनी उस भाग भरी बहू को जिसकी कोख खुलने वाली है।" अपने संतानहीन होने का सारा दोष वह अपने पति सरदारीलाल पर लगाती हुई कहती है "मेरा बस चले तो गिनकर सौ कौरव जन डालूँ पर अम्मा अपने लाडले बेटे का भी तो आड़तोड़ जुटाओ निगोड़े मेरे पत्थर के बूट में भी कोई हरकत तो हो।" 'मित्रो' की पीड़ा को सोबती 'मित्रो' की सास 'धनवंती' के द्वारा दर्शाते हैं "छेड़-छाड़, चटाक-पटाक, बोली-ताने में निपुण मित्रो इतनी सिदकवाली कब से हो गई ? नद-नदियां सी खुली-डुली बहू आज अंधेरी कोठरी सी गुमसुम क्यों ?" माँ बनने की चाहत को दर्शाते हुए 'डॉ.घनश्याम मधुप' लिखते हैं "मित्रो एक ऐसी नारी है मांस-सज्जा से बनी नारी जिसमें स्नेह भी है, ममता भी माँ की हौस भी और एक अविरल बहती वासना सरिता भी।"

सास के द्वारा अपने बेटे की प्रशंसा कर मेरा सरदारी स्वभाव का कड़वा है पर जी का बुरा नहीं। तुम्हारी भी कोख जल्द ही भरेगी कहने पर पति के संबंध में मित्रो अपनी सास से साफ-साफ शब्दों में कहती है "तुम्हारे इस बेटे के यहाँ कुछ होगा तो मित्रो चूहड़ी के पैरों का धोवन पी अपना जन्म सुफल कर लेगी !" 'सोबती' मित्रो के जरिये पूरे समाज से प्रश्न करती है कि क्या अगर स्त्री में कोई कमी होती तो पुरुष उसे पनाह देते ? क्या कोई पुरुष संतान की चाह में दूसरा विवाह नहीं करता ? 'मित्रो' संतानप्राप्ति के लिए दूसरे के संपर्क में जीना चाहती है मगर समाज और परिवार में उसे दोषी के नजर से देखा जाता है। उससे पूछा जाता है कि क्या यह सच है कि किसी से संबंध बनाने की कोशिश की है तो वह निडर होकर अपनी भावनाओं को अपने ही अंदर रखते हुए कहती है "सच तो यूँ, जेठ जी, कि दिन दुनिया बिसरा मैं मनुक्ख कि जात से हँस-खेल लेती हूँ। झूठ यूँ कि खसम का दिया राजपाट छोड़े मैं कोठे पर तो नहीं जा बैठी ?" अर्थात मित्रो इससे अपने को अपराधी नहीं मानती क्योंकि वह जानती है कि अपने सुख के लिए लड़ना कोई अपराध नहीं। मित्रो की माँ बनने की चाहत, समाज और परिवार का उनके प्रति प्रतिक्रिया पर 'रोहिणी' लिखते हैं "मातृत्व की अदम्य ललक मित्रो को इतना उदण्ड बना दिया है कि रूढ़ नैतिकता के परखचे उड़ाने को वह तैयार है। पति उसे माँ नहीं बना सकता और मित्रो है कि माँ बनना चाहती है। इस साथ को पूरा करने के लिए किसी और का सहारा ढूँढे तो तत्कालिन सामाजिक, पारिवारिक, नैतिक मूल्यों की अदालत में अक्षमय अपराधी ठहरा दी जाती है। एक सी प्रक्रिया, एक सा परिणाम लेकिन उस पर प्रतिक्रिया भिन्न।"

संयुक्त परिवार में स्त्री :-संयुक्त परिवार में प्रत्येक व्यक्ति की ज़िम्मेदारी होती है कि वह अपने स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो या परिवार की कोई भी समस्या उसे आपस में मिलकर सूलझाये। संयुक्त परिवार का कोई एक मुखिया होता है जिसके अंतर्गत सारा निर्णय लिया जाता है पर आज की नारी स्वयं निर्णय लेना चाहती है जिसके चलते संयुक्त परिवार में विघटन होने लगा है। उपन्यास में कुछ ऐसे पात्र है जो संयुक्त परिवार से अपने को बाहर निकालना चाहती है तो कोई उसे संभालने के लिए जी जान लगा देती है। यहाँ देखा गया है कि केवल धनवंती ही अपने परिवार के प्रति सजग रहती है। कई बार वह नाकाम होती है फिर भी अपने बहू-बेटों को समझाती है "बेटा तुम्हारे बाप का जी राज़ी नहीं इनके कहे को भरम न करना बनवारीलाल, तू भाइयों में सबसे बड़ा है, तू ही पूछ अपने भाई-भौजाई से।" प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है कि उनकी वृद्धावस्था सुख-चैन से गुजरे। इस संयुक्त परिवार के विखंडन से अधिक हानि बुजुर्गों को ही होती रही है जिसका जीता जागता उदाहरण 'धन्नो' और 'गुरुदास' है। अपनी पत्नी की तारीफ करता हुआ गुरुदास कहते हैं "धनवंती जैसी तुमने निभाई, कोई और क्या निभाएगा ? तेरे कर्मों में ही मेहनत है, साथिन।" तो वहीं हक्का-बक्का गुरुदास अपने दुःख को व्यक्त करता हुआ पत्नी से कहता है "न लो, बड़ी उम्र में इस बूढ़े का इंतहान न लो। मैं बूढ़ा ठहरा, मुझे छूटती दो इन लड़ाई-झगड़ों से। धनवंती, कचहरी में कोई और नहीं, हम दोनों ही मुजरिम हैं।"

उपन्यास में गुरुदास और धनवंती आय दिन घर में चलने वाले बखेरों से परेसान है। मित्रो और उसके पति सरदारी के रोज के झगड़ों ने उन्हें इस उम्र में परेशान कर रखा है। एक तो धनवंती अपने घर परिवार को एकजुट न रख पाने के कारण चिंतित रहती है तो दूसरी ओर आज के आधुनिक नारी का परिवार से हटकर अकेले अपने परिवार बसाने का सपना देखना। जिसके चलते 'मित्रो' और 'फूलावंती' घर में गुस्से से लपटी घूमती रहती है। फूलावंती, गुलजारीलाल को हमेशा मायके ले जाने के लिए परेशान करती रहती है अंत में धनवंती हारकर भरा कंठ पुचकारकर कहती है "गुल बेटा, इस बूढ़ी की सोच न कर। जिससे तेरी घरवाली को ठंड पड़े, तू वहीं कर।" संयुक्त परिवार में आदान-प्रदान का विषय बना रहता है पर फूला नहीं चाहती वह अपने गहने लेने पर कसकर जवाब देती हुई कहती है "खूब कहीं,जेठानी ! जो बैठे-बैठे माल हथिया ले उसके लिए तो रह हुआ व्यवहार और जो बेचारा खो बैठे उसके लिए लूटमार।" वहीं मित्रो भी अपने अनुसार रहना चाहती है जहाँ उसे कोई रोक टोक न दे और न कोई उसे सवाल, जवाब करें।

समान अधिकार न मिल पाने की समस्या :- स्वतंन्त्रता पूर्व काल से ही नारी की स्थिति सोचनीय रही है। वह घर, परिवार, बच्चों, समाज तक ही उपेक्षित होकर रह जाती, उसे अपने लिए सोचने का हक नहीं था। वहीं आज की नारी अपने लिए आवाज़ उठाने में सक्षम होने लगी है फिर चाहे वह आर्थिक, सामाजिक हो या राजनीतिक। यहाँ 'मित्रो' के जरिये उन सारी मान्यताओं को तोड़ने का प्रयास किया है जो स्त्रियों को केवल चारदीवारी में ही बंद करके रख दे। 'मित्रो' आत्मसम्मान के लिए परिवार के सभी सदस्यों से लड़ती है। सोबती स्वयं कहते हैं "मित्रो व्यक्ति की जिस छटपटाहट का प्रतीक है वह यौन उफान ही नहीं, व्यक्ति की अस्मिता का भी अकस है जिसे नारी की पारिवारिक महिमा में भुला दिया जाता है। मित्रो को लिखने से पहले कुछ मालूम नहीं था कि वह किस तस्वीर की निगेटिवे थी या निगेटिवे से कौन सा चेहरा उभर आयेगा।" 'मित्रो' पितृसत्तात्मकता को तोड़कर नए समाज की कल्पना करती है जहाँ स्त्रियों को पुरुषों की तरह समान अधिकार मिले। सास उसे समझाती हुई कहती है "सुमित्रावन्ती इसे जिद चढ़ी है तो तू ही आँख नीची कर ले। बेटी मर्द मालिक का सामना हम बेचारियों को क्या सोहे ?" परंतु उसे यह स्वीकार्य नहीं। वह अपने अधिकारों के लिए लड़ना उचित मानती है। वह पति को परमेश्वर रूप में नहीं बल्कि मनुष्य के रुप में देखती है। वह चाहती है कि उसका पति उसे वहीं सम्मान दे जो हर पुरुष को मिलता है परंतु वह रोज उसके साथ मारपीट करता है। पुरुषसत्ता का विरोध करती हुई अपनी सास 'धनवंती' से वह कहती है "माँजी, बेटे की चिंता में तन न सुखाओ, इसकी करनी आप ही इसे काले पानियों भिजवाएगी।" अतः मित्रो के द्वारा स्त्री की एक ऐसी छवि उभरकर आई है जो आज तक हाशिये पर ही रही है। कभी वह समाज से, कभी परिवार से तो कभी पति से प्रतारित की जाती है।

यौन संबंध की समस्या : - स्त्री स्वतंत्रता की एक बड़ी कारण आज यौन-सुचिता बनी हुई है। उपन्यास में 'मित्रो' के जरिए यौन पवित्रता संबंधी भारतीय मानसिकता में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। मित्रो अपने पति के नपुंसक होने के कारण अतृप्त रहती है। 'मित्रो' की परिभाषा में 'डॉ. भगवानदास वर्मा' लिखते हैं "कृष्णा सोबती की मित्रो एक ऐसी नारी है जो पारंपरिक नैतिकता बोध के सारे विश्वासों से मुक्त है, केवल हाड़ माँस की बनी उन्मुक्त नारी। मित्रो के रूप में एक ऐसी नारी की प्राकृतिक वासना सारे अहम और सुप्राहम के गिलाए को फाड़कर बहे आ रही है फिर भी मित्रो वासना की सरिता नहीं है उसमें सुसंस्कृत नारी जैसा स्नेह, ममता आदि मानवीय गुण है। लगता है प्रत्येक नारी के हृदय में कही दूर मित्रो बैठी हुई है।" अतृप्त काम मनुष्य को बेचैन, अस्थिर एवं क्रोधित बना देता है जिसका जीता जागता उदाहरण 'मित्रो' है। मित्रो का जेठानी 'सुहागवंती' के समक्ष खटिया पर बिना सलवार, कुर्ते पहने लेटी रहना उसके अतृप्त यौन का परिचय देता है। एक तो पति 'सरदारीलाल' उसकी अतृप्त भावना को तृप्त नहीं कर पाता साथ ही रोज उसके साथ मारपीट करता है। सरदारीलाल हमेशा 'मित्रो' को नज़र नीचे करने को कहता है "सुना नहीं ! एक और जमाकर कहा नज़र नीची करती है कि नहीं।" मित्रो अतृप्त वासना को लेकर जीती है। जिसकी पूर्ति पति द्वारा न होने पर वह अन्य पुरुष से

संबंध बनाना चाहती है लेकिन वहाँ वह गलत ठहराई जाती है। यह केवल मित्रो की ही नहीं बल्कि कई ऐसी स्त्रियाँ है जो अपने पति से अतृप्तता की मांग करती है। मित्रो अन्य बहुओं की तरह घूँघट की चिंता नहीं करती। उसकी नजरें न कभी झुकती हैं और न ही वह किसी से डरकर रहती है। कभी अपने ननद जनकी से काम सम्बन्धों की बात करती है तो कभी जेठानी 'सुहागवंती' से तो वहीं जेठ 'बनवारीलाल' को तिरछे नज़रों से छेड़ते हुए कहना "जेठ जी अपनी जिठानी के तूल तो मैं कहाँ पर एक नज़र इधर भी।" अपनी शारीरिक इच्छा की माँग करती हुई 'मित्रो' कहती है "देवर तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानता। बहुत हुआ हफ्ते, पखवाड़े और मेरी देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास की मछली सी तड़पती हूँ।" मित्रो पहली ऐसी नारी है जो अपनी काम अनुभूति की व्यापक एवं निसंकोच ललक का उद्घाटन करती है। समाज जिसे कुकर्म, अधर्म मानता है मित्रो उसे कुकर्म नहीं मानती।

निष्कर्ष : निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लेखिका ने नारी जीवन की तमाम समस्याओं को इस उपन्यास में चित्रित किया है। उनकी नारी किसी कल्पनालोक से उतरी नारी नहीं है बल्कि इसी दुनिया की इसी समाज की सताई हुई नारियाँ है। 'सोबती' अपने मार्ग का स्वयं निर्माण करके उस पर चलने में विश्वास रखती है तभी तो 'मित्रो', 'धनवंती', 'बालो', 'फूलावंती' जैसी पात्र को इस उपन्यास में लायी है। वह न किसी को पछारने की बात रखती है और न ही उसके अनुकूल होने की उन्होंने तो बस अपने बेबाक व्यक्तित्व के जरिये पितृसत्तात्मकता को तोड़ने का प्रयास किया है। उन्होंने इस उपन्यास के जरिये नारी की विभिन्न समस्याओं को बेबाक और निर्भीक ढंग से प्रस्तुत किया है। अतः हम कह सकते हैं कि 'कृष्णा सोबती' ने अपनी नायिकाओं का एक अस्तित्व स्थापित किया और उसे उसके व्यक्तित्व से परिचित कराया। आज की नारी पुरुष का अत्याचार सहन नहीं करती बल्कि उसका विरोध करती है। नारी को समाज में एक व्यक्ति के रूप में स्थापित करना लेखिका का एकमात्र उद्देश्य है और अपने इस उद्देश्य में उन्हें कामियाबी भी मिली। उनकी नारी आज सामाजिक व्यवस्था के साथ संघर्ष करके, मुक्ति की ओर अग्रसर होकर अपनी स्वतंत्रता का ऐलान करती है और समय के साथ परिवर्तित चेतना का परिचय देती है।

****

संदर्भ :-
1.सोबती कृष्णा,मित्रो मरजानी,पृ.-87.
2.अंतरेड्डी डॉ. सुलोचना,कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रतिबिम्बित नारी जीवन,पृ.-133.
3.सोबती कृष्णा,मित्रो मरजानी,पृ.-97.
4.खेतान प्रभा,स्त्री: उपेक्षिता,पृ.-248.
5.सोबती कृष्णा,मित्रो मरजानी,पृ.-75.
6.वहीं,पृ.-75.
7.वहीं,पृ.-66.
8.राठोड डॉ. शंकर ए. ,कृष्णा सोबती:व्यक्तित्व एवं कृतित्व,पृ.-66.
9.सोबती कृष्णा,मित्रो मरजानी,पृ.-67.
10.वहीं,पृ.-36.
11.बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य,पृ.-135.
12.सोबती कृष्णा,मित्रो मरजानी,पृ.-34.
13.वहीं,पृ.11.
14.वहीं,पृ.-33.
15.वहीं,पृ.-35.
16.वहीं,पृ.-29.
17.बासमेह डॉ. शहनाज जाफ़र,कृष्णा सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएँ,पृ.-230.
18.सोबती कृष्णा,मित्रो मरजानी,पृ.-12.
19.वहीं,पृ.-13.
20.बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य,पृष्ट-134.
21.सोबती कृष्णा,मित्रो मरजानी,पृ.-10.
22.वहीं,पृ.-22.
23.वहीं,पृ.-19
24.वहीं,पृ.-20.

गूजरी महल संग्रहालय ग्वालियर सामान्य परिचय

डॉ. गोविन्द बाथम
सहायक प्राध्यापक इतिहास
शासकीय महाविद्यालय माड़ा, जिला-सिंगरौली (म.प्र.)

गूजरी महल संग्रहालय राज्य शासन के पुरतत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय विभाग के छह प्रमुख संग्रहालयों में से एक है। पुरावशेषों के संग्रह की दृष्टि से इस संग्रहालय की गिनती देश के कुछ गिने चुने प्रमुख एवं अग्रणी संग्रहालयों में की जाती है।

सन् 1913 ई. में ग्वालियर राज्य के तत्कालीन महाराजा माधव राव सिंधिया ने पुरातत्व विभाग का गठन कर स्व.श्री एम.बी. गर्दे को इसका मुख्य नियुक्त किया तथा ग्वालियर में एक संग्रहालय स्थापित करने का निर्णय भी लिया। सन् 1920 ई. में संग्रहालय की स्थापना के लिये गूजरी महल स्थानीय पुरातत्व विभाग को सौंप दिया गया। संग्रहालय के लिये राज्य भर से पुरावशेषों का संग्रह किया गया। सन् 1922 ई. में संग्रहालय का विधिवत उद्घाटन किया गया। स्थापना से आज तक संग्रहालय ने विकास के कई सोपान पार किये हैं। नवीन दीर्घाओं का निर्माण किया गया है।

संग्रहालय में एक ग्रन्थालय है जिसमें पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति, धर्म एवं दर्शन से संबंधित चार हजार ग्रन्थ हैं। विद्वान एवं शोधार्थी ग्रंथालय में बैठकर ग्रंथों का अध्ययन कर सकते हैं। संग्रहालय में एक विक्रय पटल (म्यूजियम शॉप) भी है, जिसमें विभाग द्वारा तैयार की गई पुरावशेषों की प्रतिकृतियां एवं विभागीय प्रकाशन विक्रय हेतु उपलब्ध है। दर्शकों, पर्यटकों की सुविधा के लिये विभाग द्वारा संग्रहालय में मार्गदर्शक की सेवाएं भी उपलब्ध है।

गूजरी महल किले के पूर्वी रास्ते पर बादलगढ़ दरवाजे के समीप स्थित है। रेल्वे स्टेश्न एवं बस स्टेण्ड से गूजरी महल संग्रहालय की दूरी लगभग 4 कि.मी. है। गूजरी महल जाने के लिये टैक्सी, टैम्पो एवं ऑटो की सुविधा उपलब्ध है।

संग्रहालय सोमवार एवं राजपत्रित अवकाश को छोड़कर प्रतिदिन प्रातः दस बजे से सायं 5 बजे तक खुला रहता है। संग्रहालय में बीस रूपये भारतीय तथा दो सौ रूपये प्रवेश शुल्क विदेशियों के लिए है।

गूजरी महल:- संग्रहालय के लिये चुना गया गूजरी महल अपने आप में ही एक दर्शनीय स्मारक है। स्थापत्य एवं अलंकरण की दृष्टि से यह महल ग्वालियर के किले का दूसरी महत्वपूर्ण महल है। गूजरी महल का निर्माण राजा मानसिंह ने अपनी सर्वाधिक प्रिय रानी मृगनयनी के रहने के लिये कराया था मृगनयनी गूजर वंश में पैदा हुई थी इसलिये इस महल का नाम गूजरी महल पड़ गया। राई गांव में रहने वाली गूजर कन्या निन्नी के नयन मृग के समान अत्यन्त सुंदर थे इसलिये राजा ने उसे मृगनयनी का संबोधन दिया।

एक रोचक प्रसंग के अनुसार एक बार राजा मानसिंह राई गांव के पास शिकार खेलने गये वहां उन्होंने एक रूपवती कन्या को अपनी बलिष्ठ बांहों से जंगली भैंसे को वश में करते हुए देखा। उस युवती में रूप एवं बल के अनूठे संगम को देखकर राजा उस पर मोहित हो गये। राजा ने निन्नी नामक उस सुंदरी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा, जिसे उसने इस शर्त के साथ स्वीकार कर लिया कि विवाह के बाद भी वह राई गांव का ही पानी पियेगी। शर्त के अनुसार राजा मानसिंह ने राई गांव से महल तक पानी लाने की व्यवस्था की। गूजरी महल के तलघर में वे मिट्टी के पाइप आज भी देखे जा सकते हैं, जिनसे राई गांव का पानी महल तक लाया गया था। राजा मानसिंह एवं मृगनयनी की प्रेम कथा ग्वालियर के इतिहास का सर्वाधिक लोकप्रिय प्रसंग है।